मूल्य 1 रु.
वर्षः 11 - अंक : 54, मुंबई, गुरुवार, 8 अप्रैल, 2021 ■ RNI.NO. MAHHIN/2010/34146 ■ संपादकः दिलशाद एस. खान
दैनिक
मुंबई हलचल
भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त ®
अब हर सच होगा उजागर

वैज्ञानिकों की चेतावनी

...तो भारत में मुश्किल होगा कोरोना का इलाज

जेनेटिक सिक्वेंसिंग में अमेरिका, ब्रिटेन से काफी पीछे भारत

संवाददाता

नई दिल्ली। भारत में कोरोना की दूसरी लहर प्रचंड होती जा रही है। फरवरी महीने में जहां रोजाना औसतन 11,000 नए केस सामने आ रहे थे, वह अब 9 गुना से भी ज्यादा बढ़ गए हैं। मंगलवार को तो देशभर में कोरोना संक्रमण के 1 लाख 15 हजार से ज्यादा नए मामले सामने आए। आखिर, संक्रमण में इतनी तेजी से उछाल की क्या वजह है? क्या वायरस का कोई नया वैरिएंट पैदा हुआ है जो इतनी तेजी से फैल रहा है? विशेषज्ञों के मुताबिक, भारत कोरोना संक्रमण के पॉजिटिव सैंपलों की प्रयोगशालाओं में पर्याप्त जांच-पड़ताल करने में नाकाम रहा है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

वैक्सीन भी खो देगी असर

इस रफ्तार से तो अगले 2 साल में भी नहीं पूरा हो पाएगा वैक्सीनेशन

भारत अभी औसतन हर दिन 26 लाख वैक्सीन डोज लगा रहा है। इस रफ्तार से उसे अपनी 75 प्रतिशत आबादी के टीकाकरण में अभी 2 साल और लगेंगे। ब्लूमबर्ग वैक्सीन ट्रैकर के मुताबिक भारत में करीब 5 प्रतिशत लोग पहली डोज लगवा चुके हैं जबकि सिर्फ 0.8 प्रतिशत ही दोनों डोज पा चुके हैं।

कोरोना पर सियासत

स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन का गंभीर आरोप, कहा- कई राज्य गलत सूचना और भय फैला रहे

संवाददाता

नई दिल्ली। देश में बढ़ते कोरोना के मामले को लेकर सियासत तेज हो गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ हर्षवर्धन ने महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ पर गलत सूचना और भय फैलाने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ के नेताओं द्वारा टिप्पणियां प्राप्त हुई हैं जिनका उद्देश्य टीकाकरण पर गलत सूचना देना और भय फैलाना है। बेहतर होगा कि राज्य सरकार राजनीति पर ध्यान देने की बजाय अपनी आधारभूत स्वास्थ्य संरचना पर जोर दें। वहीं उन्होंने महाराष्ट्र को लेकर कहा कि महाराष्ट्र सरकार द्वारा ज़िम्मेदारी से कार्य न करना समझ से परे है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

राजेश टोपे ने की केंद्र से मांगः महाराष्ट्र सरकार के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने भी माना है कि राज्य में कुरौना की वैक्सीन आप कम हो गई है वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से निकले तो सरकार से 40 लाख कोरोना वैक्सीन के डोज की मांग की है। केंद्र सरकार हमें समय पर टीका उपलब्ध करवाएं।

सचिन वाजे ने लगाए गंभीर आरोप

'अनिल देशमुख ने मेरी नियुक्ति के लिए मांगे 2 करोड़'

मुंबई। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री अनिल देशमुख ने मेरी सेवा को फिर से बहाल करने के लिए मुझसे दो करोड़ रुपए मांगे थे। सचिन वाजे ने ये गंभीर आरोप लगाया है। सचिन वाजे ने इसकी जानकारी देते हुए एक पत्र लिखा है। इस पत्र में वाजे ने महाविकास आघाडी के दो मंत्रियों पर गंभीर आरोप लगाए हैं।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

परिवहन मंत्री अनिल परब का भी लिया नाम

'बेटियों की कसम मैंने वसूली के लिए वाजे को नहीं बोला'

महाराष्ट्र के परिवहन मंत्री अनिल परब का कहना है कि मैं बाला साहेब ठाकरे का शिव सैनिक हूं और हफ्तावसूली मेरा संस्कार नही है। उन्होंने कहा कि विपक्ष वाले 2 दिन पहले से मेरा नाम लेकर कह रहे थे कि अनिल परब को इस्तीफा देना पड़ेगा यानी इन्हें सचिन वाजे के लेटर के बारे में जानकारी थी। मैं अपनी दोनों बेटियों की कसम खाकर कहता हूं कि मैंने किसी भी वसूली के लिए सचिन वाजे को नहीं बोला।

हमारी बात

चुनाव आयोग से अपेक्षा

किसी भी लोकतंत्र की सफलता उसके जनादेश की शुचिता से तय होती है। और इसी पवित्रता को सुनिश्चित करने के लिए दुनिया भर के लोकतंत्रों ने तमाम तरह के प्रयोग-इंतजामात भी किए हैं। भारतीय चुनाव आयोग ने बैलेट पेपर से ईवीएम और फिर वीवीपैट तक का सफर तय किया। कभी एक-दो चरण में निपटने वाले चुनाव अब आठ-नौ चरणों में इसीलिए होते हैं, ताकि इस विशाल लोकतंत्र में हाशिये के मतदाता भी बेखौफ होकर अपने मताधिकार का इस्तेमाल कर सकें। कोई असामाजिक तत्व जनादेश की पवित्रता न नष्ट कर सके। लेकिन पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के दौरान तंत्र की जो अनियमितताएं सामने आई हैं, वे न केवल निर्वाचन आयोग की प्रतिष्ठा को चोट पहुंचाती हैं, बल्कि लोकतंत्र में आम आदमी की आस्था को भी डिगाती हैं। पहले असम में भाजपा उम्मीदवार की गाड़ी से ईवीएम का पाया जाना, फिर वहीं के हाफलौंग विधानसभा क्षेत्र के एक मतदान केंद्र पर कुल पंजीकृत मतदाताओं से लगभग दोगुना वोट गिर जाना और अब पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के एक नेता के यहां से ईवीएम व वीवीपैट की बरामदगी बताती है कि ये लापरवाहियां कितनी गंभीर हैं। इन तीनों ही मामलों में चुनाव आयोग ने संबंधित दोषी अधिकारियों को निलंबित किया है, पर आयोग के लिए यह गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी कोई गड़बड़ी फिर सामने न आए। इन अनियमितताओं के अलावा भी उसके कतिपय फैसलों का लोगों में संदेश अच्छा नहीं गया। आचार संहिता के उल्लंघन के मामले में पहले असम के स्वास्थ्य मंत्री हेमंत बिस्व सरमा के 48 घंटे तक प्रचार करने पर रोक लगाई गई थी और फिर अगले ही दिन प्रतिबंध की अवधि घटाकर 24 घंटे कर दी गई। अगर सरमा के खिलाफ शिकायत गंभीर नहीं थी, तो फिर उनके विरुद्ध ऐसा कदम ही क्यों उठाया गया? हम नहीं भूल सकते कि आयोग ने सख्त नजीरों से ही अपनी साख अर्जित की है। चुनाव आयोग का काम काफी चुनौतीपूर्ण है, इससे कौन इनकार कर सकता है? लेकिन देश के आम चुनाव के मुकाबले ये तो फिर भी पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव हैं। आयोग को अपने पर्यवेक्षकों के स्तर पर अधिक काम करने की जरूरत है। मतदानकर्मियों को बेहतर प्रशिक्षण देने की भी आवश्यकता है। देश में चुनाव प्रचार इन दिनों जितने कटु होते जा रहे हैं, उसे देखते हुए आयोग को आचार संहिता को सख्ती से लागू करना होगा। भारतीय चुनावों की वैश्विक प्रतिष्ठा देश के लिए गर्व की बात है, इसकी हर हाल में रक्षा की जानी चाहिए। आला अदालत और चुनाव आयोग जैसे अब चंद ही सांविधानिक संस्थान ऐसे बचे हैं, जिन पर भारतीयों का भरोसा कायम है। इस भरोसे की रक्षा की जिम्मेदारी इनके कर्ता-धर्ताओं के ऊपर ही है। लोकतंत्र में जनता जिन संस्थाओं से शक्ति अर्जित करती है, उनकी मजबूती कितनी जरूरी है, हाल ही में हमने अमेरिका में देखा है। चुनाव आयोग के लिए यह कम चुनौतीपूर्ण नहीं है कि वह सभी राजनीतिक पार्टियों, उम्मीदवारों को एक बराबर मैदान मुहैया कराए। मतदाताओं को मतदान केंद्रों तक आने के लिए उत्साहित करने में पार्टियों के प्रचार से कहीं बड़ी भूमिका आयोग में भरोसे की है। इसलिए चुनाव आयोग को इन चूकों से पार पाते हुए अपने लिए लगातार ऊंचा लक्ष्य रखना होगा।

महाराष्ट्र: राजनीति और भ्रष्टाचार

महाराष्ट्र के गृहमंत्री अनिल देशमुख का इस्तीफा काफी पहले ही हो जाना चाहिए था। लेकिन हमारे नेताओं की खाल इतनी मोटी हो चुकी है कि जब तक उन पर अदालतों का डंडा न पड़े, वे टस से मस होते ही नहीं। बताते है कि देशमुख ने अपने पुलिसकर्मी सचिव वझे से हर माह 100 करोड़ रु. उगाह के देने को कहा था, इस बात के खुलते ही एक से एक रहस्य खुलकर सामने आने लगे थे। उद्योगपति मुकेश अंबानी के घर के सामने विस्फोटकों से भरी कार रखने, उस कार के मालिक मनसुख हीरेन की हत्या और इस सब में वझे की साजिश के स्पष्ट संकेत मिलने लगे। जिस मामले की जांच के लिए वझे जिम्मेदार था, उसी मामले में ही उसका गिरफ्तार किया जाना अपने आप में बड़ा अजूबा था। एक मामूली पुलिस इंस्पेक्टर, जो किसी अपराध के कारण, 16 साल मुअत्तिल रहा, उसका फिर नौकरी पर जम जाना और सीधे गृहमंत्री से संवाद करना आखिर किस बात का सूचक है? यह रहस्य तब खुला, जब मुंबई के पुलिस आयुक्त परमबीरसिंह का अचानक तबादला कर दिया गया।

परमबीर को गुस्सा आया और उसने मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को लिखे अपने पत्र में गृहमंत्री, वझे और पुलिस विभाग की सारी पोल खोलकर रख दी। उसी आधार पर महाराष्ट्र के उच्च न्यायालय ने गहरा दुख व्यक्त किया और प्रांतीय सरकार द्वारा बिठाई गई जांच की बजाय सीबीआई की जांच की मांग की, वह भी 15 दिन के अंदर-अंदर! हो सकता है कि ठाकरे सरकार सर्वोच्च न्यायालय की शरण में जाने की कोशिश करे लेकिन पिछले 4-5 सप्ताहों में ठाकरे-सरकार ने अपनी इज्जत पैंदे में बिठा ली है। जाहिर है कि 100 करोड़ रु. महिने का एक मंत्री क्या करेगा? या तो वह पैसा वह मुख्यमंत्री या अपने पार्टी-अध्यक्ष को थमाएगा! इसीलिए स्वयं मुख्यमंत्री और उनके प्रवक्ता देशमुख की ढाल बने हुए थे। परमबीर के आरोपों को पहले तो यह कहकर उन्होंने रद्द किया कि वे प्रामाणिक नहीं हैं, क्योंकि उसमें ई-मेल पता कोई दूसरा है और परमबीर के हस्ताक्षर भी नहीं हैं। शरद पवार अपनी पार्टी, नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी के गृहमंत्री अनिल देशमुख को बचाने की कोशिश करते रहे। इस महाअघाड़ी-गठबंधन की तीसरी पार्टी कांग्रेस की भी हवा निकली पड़ी थी। उसने भी देशमुख के इस्तीफे की मांग नहीं की। इन तीनों पार्टियों का इस षड़यंत्र और भ्रष्टाचार के प्रति जो रवैया हमने देखा, क्या वह सभी पार्टियों का नहीं है? कोई भी पार्टी या नेता दूध का धुला हुआ नहीं है। रफाल-सौदे में दी गई रिश्वत की खबर आज ही फूट पड़ी है। हमारी राजनीति का चरित्र इतना चौपट हो चुका है कि वह काजल की कोठरी बन चुकी है। अगर स्वयं गांधीजी को भी इसमें प्रवेश करना पड़ता तो पता नहीं कि उनके-जैसा महापुरुष भी बिना कालिख पुतवाए, इस कोठरी से बाहर निकल पाता या नहीं? वह दिन कब आएगा, जब साफ-सुथरे लोग राजनीति में जाना चाहेंगे और उसमें जाकर भी वे साफ-सुथरे बने रह सकेंगे? मिर्जा गालिब ने किसी दूसरे संदर्भ में ठीक ही लिखा था– 'जिस को हो दीन ओ दिल अजीज, उसकी गली में जाए क्यूँ?'

21वीं सदी में गुलामी और चीन !

सचमुच सोचना, समझना और अनुभव की हकीकत में विश्वास वाली बात नहीं जो 21वीं सदी में वह होता हुआ है, जो 18वीं-19 वीं सदी में था! देश और लोग 21वीं सदी में वैसे ही गुलाम बन रहे हैं, जैसे 18वीं-19 वीं सदी में बने थे। आश्चर्य का और बड़ा हैरानी वाला पहलू क्षेत्र विशेष को उपनिवेश बनाने का तरीका भी घूमा-फिराकर पुराना। तरीके में शुरूआत व्यापार-धंधे और दोस्ती से। फिर सहयोग-मदद के नाम पर निवेश और अंत में वही सब जो ईस्ट इंडिया कंपनी से भारत में हुआ था। अंग्रेजों ने जहांगीर के दरबार में नजराना दे कर पहले दोस्ती बनाई। धंधे की अनुमति ली और धीरे-धीरे ईस्ट इंडिया कंपनी के गोदाम बने। फिर छोटे-छोटे वे मालिकाना इलाके जो किले की तरह थे, जहां सुरक्षा का उनका खुद का सुरक्षा प्रबंध था। उनमें ठाठ से अंग्रेज रहते। हिंदुस्तानी नौकर-चाकरों से पंखा चलवाते, पांव दबवाते, बच्चों की देखभाल, घर का काम करवाते। बतौर मालिक उनका अलग खास जीवन! देशी-काले लोगों की लेबर में अंग्रेजों के शाही जीवन का वह नया अनहोना अंदाज था, जिसे देख देशी लोग हैरान होते थे। सेवादारी भक्ति से होती थी। जगत सेठ जैसे हिंदु सेठों को धंधे का नया अवसर बनता लगता था। वह सब तब और अब 21वीं सदी में भी नए पैमाने व अंदाज में। सवाल है तब और अब में क्या फर्क है? हां, है और वे ये है- तब पुनर्जागरण, औद्योगिक क्रांति के भभके में यूरोप के कई देश उपनिवेश बनाने की होड़ में थे। तब गुलाम लोगों का व्यापार प्रचलन में था। जंजीरों में जकड़े काले-अश्वेतों की मंडियों में गुलामों की खरीद-फरोख्त होती थी। अफ्रीका दुनिया का गुलाम सप्लायर था। नंबर तीन फर्क तब दुनिया, गांव नहीं थी। भूमंडीलकृत दुनिया नहीं थी। नंबर चार फर्क, तब इलाकों या आबादी क्षेत्रों को गुलाम बनाने का अंतिम औजार सेना व सैनिक ताकत थी। उस नाते अब सेना का वैसा महत्व नहीं है, जैसा पहले था। अब उसकी जगह पैसा-पूंजी-वित्त-व्यापार के महाबली देश दुनिया को मुट्ठी में रखने का उद्देश्य, लक्ष्य बनाए हुए हैं। अंत में वर्तमान-भविष्य की महत्वाकांक्षाओं का ज्वार, उसकी ड्राईविंग ताकत सभ्यताओं का संघर्ष भी नया विशेष वैश्विक पहलू है!उस नाते लगेगा कि पश्चिमी-ईसाई-यहूदी-यूरोपीय सभ्यता जहां दुनिया को मुट्ठी में समेटने की फितरत में है वहीं इस्लाम जुनूनी, चाइनीज हॉन सभ्यता और हिंदू सभ्यता भी अपनी-अपनी पताका से अपने को विश्व गुरू समझ दुनिया में जलवा बनाने की उधेड़बुन में! पर इस सदी के पहले दो दशकों की घटनाओं के अनुभव में अपना मानना है कि पिछले पांच सौ सालों में (मोटे तौर पर रेनांसा बाद) जिस यूरोपीय सभ्यता की धुरी पर दुनिया घूमी है वह क्योंकि ज्ञान-विज्ञान-तकनीक से अब मंगल ग्रह जैसे सपने लिए हुए है और उसके सोचने-उड़ने का महामारी काल से कुछ अलग रूझान बनता लगता है तो इसका इस्लाम या चाइनीज हान सभ्यता से आर-पार का मुकाबला टलता लगता है। वह नौबत नहीं आएगी मतलब, सभ्यता का संघर्ष छुपा-दबा-टला रहेगा। तो होता हुआ क्या है? चीन जहां पश्चिम के अपने-आप में खोए हुए होने का फायदा उठाते हुआ होगा वहीं घनघोर आर्थिकी प्रतिस्पर्धा में जीतने का जुनून लिए रहेगा। हां, महामारी काल से, पिछले साल और आने वाले दो-तीन सालों का अनुभव जहां गरीब-कंगले देशों को आर्थिक गुलामी की तरफ ले जाएगा वहीं अमीर-विकसित देशों में चीन अपनी आर्थिकी दादागिरी में वह करेगा, जिससे अमेरिका-यूरोप प्रतिस्पर्धा से बाहर हों और वह फिर अपने तरीकों-विचार-मॉडल में दुनिया को ढालने की ओर बढ़े। उस नाते जरूर संभव है कि आने वाला वक्त आर्थिक तकाजों में तरीकों-विचार-मॉडल की वह जिद भी बना बैठे जो सभ्यताओं के संघर्ष की भूमिका लिए हुए हो। इस दिशा का प्रतीक, अगुआ नंबर एक देश है चीन! महामारी काल ने चीन को नई ताकत दी है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग, उनका पोलित ब्यूरो और वहां के वे तमाम नीति-निर्धारक अपना वक्त आया मान रहे हैं, जिनके सपने हान-मंचूरियाई गौरव की विश्व पताका है। जिनके सपनों में चीन की धुरी पर पृथ्वी घूमती हुई है। वहीं पृथ्वी का वह चंद्रमा है, जिससे भाटा बनता है, ज्वार बनता है। चीन का इतिहास भरा पड़ा है खामोख्याली वाले ऐसे गौरव से। संदेह नहीं कि वक्त ने, पिछले चालीस सालों में चीन ने जो अभूतपूर्व विकास किया है और वह दुनिया की जैसी फैक्टरी बना है (मैं इसमें नंबर एक दोषी भारत को मानता हूं, अमेरिका-पश्चिम, निक्सन-किसिंजर सभी चीन को नहीं बल्कि भारत को बनाना चाहते थे लेकिन भारत के नेताओं ने, भारत राष्ट्र-राज्य की मूर्खताओं ने अवसर नहीं समझा) उसकी दास्ता गजब है।

मालिक,मुद्रक,प्रकाशक-**दिलशाद एस खान** द्वारा एस आर प्रिंटिंग प्रेस,मोहन अर्जुन कंपाउंड, वैशाली नगर दहिसर (पूर्व),मुंबई-68 से मुद्रित व मुंबई हलचल, साईं मंगल को ऑ हॉ सो बी-2-301,इस्माइल बाग नियर मालाड शॉपिंग सेंटर, एस वी रोड,मालाड (प) मुंबई से प्रकाशित RNI NO MAHHIN/2010/34146, फोन: 9619102478 /9821238815
email: mumbaihalchal@gmail com संपादक: **दिलशाद एस खान**, समाचार पत्र में छपे किसी भी समाचार से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद का निपटारा न्याय क्षेत्र मुंबई होगा।
www.mumbaihalchal.com mumbaihalchal@gmail.com https://www.facebook.com/mumbaihalchal.halchal https://twitter.com/MumbaiHalchal

24 घंटे में कोरोना रिपोर्ट नहीं, तो लाइसेंस रद्द

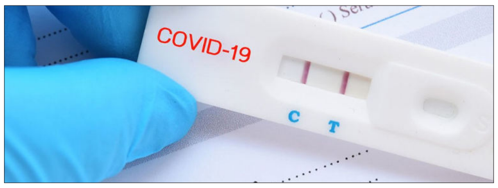

संवाददाता

मुंबई। कोरोना टेस्टिंग को लेकर बीएमसी ने नई गाइडलाइंस जारी की हैं। अब लैब को आरटीपीसीआर टेस्ट रिपोर्ट और प्राइवेट अस्पतालों को रैपिड एंटीजन टेस्ट रिपोर्ट की जानकारी 24 घंटे के भीतर बीएमसी को देनी और आईसीएमआर की वेबसाइट पर अपलोड करनी होगी। नियम तोड़ने पर लैब का लाइसेंस सस्पेंड करने की चेतावनी दी गई है। कोरोना पॉजिटिव मरीजों की जानकारी बीएमसी और आईसीएमआर को देने से पहले लैब वाले मरीजों को देते हैं। इससे बीएमसी को बेड उपलब्ध कराने में दिक्कतें आ रही हैं। बीएमसी ने निर्देश दिया है कि उसकी अनुमति के बिना प्राइवेट अस्पतालों में मरीजों का रैपिड एंटीजन टेस्ट न किया जाए। एंटीजन टेस्ट में अगर मरीज पॉजिटिव आता है, तो उसे भर्ती करने से पहले इसकी सूचना वॉर्ड वॉर रूम को दी जाए। प्राइवेट अस्पतालों को बिना लक्षणवाले मरीजों की जांच न करने और होम टेस्टिंग में लक्षण वाले मरीजों को प्राथमिकता देने को कहा गया है।

नई पाबंदियों का देवेंद्र फडणवीस ने किया विरोध

बोले-‘पाबंदी ऐसी लगाएं कि कोरोना कम हो जाए’

मुंबई। कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए लगाई गईं नई पाबंदियों का राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री व विधानसभा में विरोधी पक्ष नेता देवेंद्र फडणवीस ने कड़ा विरोध किया है। उनका कहना है कि ठाकरे सरकार को ऐसा कदम उठाना चाहिए, जिससे कि कोरोना भी कम हो जाए और लोगों का जनजीवन भी चलता रहे। कारोबारियों का कम से कम नुकसान हो और रोजगार-धंधा भी चलता रहे। गौरतलब है कि सोमवार से लगाई गई पाबंदियों को मंगलवार से और कड़ाई से लागू किया गया, जिसका भारी विरोध हो रहा है। बोरिवली, भांडुप जैसे मुंबई के अन्य हिस्सों में व्यापारी वर्ग सड़कों पर उतर आया। पुलिस को उन पर नियंत्रण पाने में काफी मुश्किल हुई। कई इलाकों में जहां दुकानें

खुली दिखाई दीं, वहीं कुछ इलाकों को पुलिस ने पूरी तरह से बंद करा दिया। बोरिवली पूर्व में दुकानें बंद करा दी गईं, जबकि पश्चिम में ज्यादातर दुकानें खुली दिखाई दीं। इससे व्यापारी सड़क पर उतर गए। हाथ में तख्तियां लेकर विरोध किया। दुकानों के सामने विरोध का बोर्ड लगा दिया।

‘हमने असहमति जताई थी’

लोगों की नाराजगी को देखते हुए फडणवीस ने ठाकरे सरकार से गुजारिश की कि वे एक बार फिर से पाबंदियों पर विचार करें। पाबंदियों की मार झेल रहे लोगों से मिलकर मुख्यमंत्री उनकी बात सुनें। उन्हें राहत मिलना जरूरी है। पत्रकारों से बात करते हुए फडणवीस ने कहा कि पाबंदी लगाने से पहले मुख्यमंत्री ठाकरे ने उनसे फोन पर बात की थी। दो दिनों के लॉकडाउन पर हमने असहमति जताई थी। मुख्यमंत्री ने जिस तरह पांच दिन की पाबंदी जारी की है, उससे लोग नाराज है। लोगों के कारोबार पर बुरा असर पड़ रहा है। कुछ जगहों पर लोग विरोध करते हुए सड़कों पर उतर आएं।

‘अर्थव्यवस्था को बहुत ज्यादा नुकसान’: फडणवीस ने कहा कि सरकार के निर्णय से लगता है कि पाबंदी लगाने से पहले सरकार ने विविध क्षेत्रों से जुड़े कारोबारियों के साथ विचार नहीं किया। इन पाबंदियों का बहुत बुरा असर पड़ेगा। राज्य की अर्थव्यवस्था को बहुत ज्यादा नुकसान होगा। फडणवीस ने कहा कि, जिस तरह की पाबंदी लगाई गई है, ऐसा लगता है कि यह तो अघोषित एक महीने का लॉकडाउन है।

‘फिर से विचार करे सरकार’: फडणवीस ने कहा कि रिटेलर्स, छोटे दुकानदार, होटल, सैलून जैसे अन्य कारोबार पर पाबंदियों को लेकर फिर से विचार-विमर्श करें। फडणवीस ने कहा कि कोरोना पर नियंत्रण पाना जरूरी है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि ऐसी पाबंदी लगाई जाए जिससे कि सब तबाह हो जाए। इससे तो कारोबार और जनजीवन दोनों प्रभावित होंगे। सरकार को नए सिरे से पाबंदियां पर विचार करना चाहिए जिससे कि कोरोना पर नियंत्रण पाया जा सके, साथ ही लोगों जनजीवन भी कम से कम प्रभावित हो।

कोस्टल रोड की सुरंगे होंगी हवादार, ‘सकार्डो नोजल’ संयंत्र लगाया जाएगा

मुंबई। दक्षिण मुंबई को पश्चिम मुंबई से जोड़ने वाले कोस्टल रोड को बीएमसी अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस करेगी। कोस्टल रोड के लिए दक्षिण मुंबई में बन रही टनल में ताजा हवा यात्रियों को मिले, इसके लिए सकार्डो नोजल मशीन बनाई जाएगी। इस मार्ग पर 2.07 किमी लंबी सुरंग का निर्माण हो रहा है। एक दूसरी टनल भी इसी के समानांतर बनेगी। प्रत्येक टनल में 3-3 पंखे लगाए जाएंगे। दोनों सुरंगों में 2 मीटर व्यास का पंखा लगाया जाएगा। यह पंखे सुरंग में उड़ने वाली धूल को भी दूसरे किनारे से बाहर निकालने का काम करेंगे। कोस्टल रोड परियोजना की चीफ इंजिनियर सुप्रभा मराठे ने बताया कि देश में बनी किसी भी टनल में पहली बार इस यंत्र का उपयोग किया जा रहा है। अत्याधुनिक सकार्डो नोजल यंत्र दोनों टनल के मुहाने पर पंखे से जुड़े रहेंगे। यह पंखे प्रति मिनट 1800 आरपीएम

की गति से घूमकर हवा को गतिमान बनाए रखेंगे। यह पंखे 50 साल तक खराब नहीं होंगे। इस पर आग का भी कोई असर नहीं होगा। सकार्डो नोजल के जरिए एक छोर से हवा को तेजी से भीतर खींचा जाएगा और दूसरे छोर से निकाल दिया जाएगा। जिस दिशा में वाहन चल रहे होंगे, उसी दिशा में हवा का प्रवाह भी बना रहेगा। मराठे ने कहा कि दुर्भाग्यवश यदि किसी वाहन में आग भी लगती है, तो उससे निकलने वाला धुआं तेजी के साथ बाहर की दिशा में निकलता रहेगा। इससे धुआं टनल में जमा नहीं हो सकेगा और किसी यात्री को घुटन भी नहीं होगी।

(पृष्ठ 1 का शेष)

वैज्ञानिकों की चेतावनी

इसलिए उसके पास पर्याप्त डेटा ही नहीं हैं जो तेजी से बढ़ते केस की वजह समझने में मददगार साबित हो सकें। ब्लूमबर्ग की एक ताजा रिपोर्ट में एक्सपर्ट्स के हवाले से चेताया गया है कि अगर भारत जेनेटिक सिक्वेंसिंग के आंकड़ों को समय रहते तेजी से नहीं बढ़ाता है तो न सिर्फ इलाज मुश्किल हो जाएगा बल्कि यह नौबत भी आ सकती है कि वैक्सीन का वायरस पर कोई खास असर ही न हो। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि अगर भारत पॉजिटिव सैंपलों की तेजी से जेनेटिक सिक्वेंसिंग नहीं करेगा तो कोरोना के खिलाफ उसकी जंग बहुत ही कमजोर हो जाएगी। न अस्पतालों में कारगर इलाज हो पाएगा और न ही वायरस के खिलाफ वैक्सीन ज्यादा कारगर साबित होगी। दरअसल, कोरोना संक्रमण के खिलाफ लड़ाई में टेस्टिंग तो महत्वपूर्ण है ही, उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है पॉजिटिव सैंपलों की जीनोम सिक्वेंसी का अध्ययन। जो लोग संक्रमित पाए जा रहे हैं, उनमें से तमाम के सैंपलों की आगे इस बात की जांच होती है कि वायरस का कोई नया वैरिएंट तो नहीं पैदा हो रहा या उसमें कोई ऐसा बदलाव तो नहीं हो रहा जो ज्यादा खतरनाक और संक्रामक हो। यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन के स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ में प्रोफेसर भ्रमर मुखर्जी के मुताबिक भारत के पास कोरोना वायरस के नए वैरिएंट से जुड़े पर्याप्त डेटा ही नहीं हैं जो बता सकें कि संक्रमण में अचानक जबरदस्त उछाल की वजह कुछ नए वैरिएंट्स हैं या नहीं। भारत पॉजिटिव सैंपलों की जेनेटिक सिक्वेंसिंग के मामले में ब्रिटेन और अमेरिका जैसे देशों के मुकाबले काफी पीछे है। सरकारी डेटा के मुताबिक भारत ने अपने पॉजिटिव सैंपलों के 1 प्रतिशत से भी कम की जेनेटिक सिक्वेंसिंग की है। दूसरी तरफ ब्रिटेन में यह आंकड़ा 8 प्रतिशत है। पिछले हफ्ते तो यूके ने पॉजिटिव सैंपलों में से 33 प्रतिशत की यानी एक तिहाई की लैब में आगे की पड़ताल के लिए जांच की। वहीं अमेरिका ने भी पिछले महीने बताया कि वह नए केसों में से करीब 4 प्रतिशत सैंपलों की जेनेटिक सिक्वेंसिंग कर रहा है।

‘अनिल देशमुख ने मेरी नियुक्ति के लिए मांगे 2 करोड़’

बताया जा रहा है कि वाजे ने ये पत्र एनआईए की कस्टडी में रहते हुए अपने वकील के साथ बैठ कर लिखे हैं। तीन पन्ने के इस पत्र में सचिन वाजे का आरोप है कि जब वो निलंबित था तब अनिल देशमुख ने उसे फोन किया था और फिर से सेवा में बहाल करने के लिए उससे 2 करोड़ रुपए की मांग की थी। इस पत्र में सचिन वाजे ने लिखा है कि अनिल देशमुख ने न सिर्फ उसे सर्विस में बनाए रखने के लिए 2 करोड़ रुपए मांगे थे साथ ही उसने सचिन वाजे से ये भी कहा था कि शरद पवार ने उन्हें वापस सस्पेंड करने के लिए कहा है। अगर वह 2 करोड़ रुपए देते हैं तो वह शरद पवार को मना लेंगे। सचिन वाजे ने अपने पत्र में लिखा है कि पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख ने उससे 1650 बार से पैसे वसूलने के लिए कहा था। इस पत्र में वाजे ने पहली बार शिवसेना के मंत्री अनिल परब का नाम भी लिया है। सचिन वाजे ने कहा है कि बीएमसी के कॉन्ट्रैक्टर से पैसे वसूलने के लिए अनिल परब ने उससे कहा था। लेकिन सचिन वाजे का कहना है कि उसने यह काम करने से मना कर दिया था। इसके अलावा अनिल परब ने एसबीयूटी ट्रस्ट के एक मामले में भी 50 करोड़ की उगाही करने के लिए सचिन वाजे से कहा था। हालांकि सचिन वाजे के इन आरोपों को अनिल परब नसचिन गलत और बेबुनियाद बताया है। उन्होंने कहा कि वाजे ने जो भी लेटर में लिखा है वह गलत है। परब ने कहा कि विरोधी पक्ष पहले से कह रहा था कि हम तीसरा विकेट लेंगे, यानी विपक्ष को पहले से जानकारी थी कि ऐसा लेटर सामने आने वाला है। उन्होंने आगे कहा कि ये मुख्यमंत्री और उनके करीबी व्यक्ति को बदनाम करने का विपक्ष का काम है और मैं किसी भी जांच एजेंसी के सामने जाने के लिए तैयार हूं।

कोरोना पर सियासत

लोगों में दहशत फैलाना मूर्खता है। वैक्सीन आपूर्ति की निगरानी लगातार की जा रही है और राज्य सरकारों को इसके बारे में नियमित रूप से अवगत कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कई अन्य राज्यों को भी अपने स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों को चिन्हित करने की आवश्यकता है। कर्नाटक, राजस्थान और गुजरात में परीक्षण की गुणवत्ता में सुधार करने की आवश्यकता है। पंजाब में गंभीर रूप से बीमार लोगों को जल्द से जल्द अस्पताल में भर्ती कर उनके स्वास्थ्य में सुधार करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार ने डीसीजीआई द्वारा आपातकालीन उपयोग प्राधिकरण दिए जाने के बावजूद कोवाक्सिन का उपयोग करने से इनकार कर दिया। राज्य सरकार अपने कार्यों से लोगों की जान संकट में ही नहीं डाल रही बल्कि दुनिया में गलत संदेश भी दे रही है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में पिछले 2-3 हफ्तों में असामयिक रूप से मौतों की संख्या अधिक है और ऐसे में राज्य सरकार की जांच केवल रेपिड एंटीजन टेस्ट पर टिकी है, जो कि सही कदम नहीं है।

लॉकडाउन का डर, मुंबई से लौट रहे प्रवासी

नौकरी से निकाल रहीं कंपनियां, रेलवे स्टेशनों पर भीड़

पिछले साल की तरह धक्के नहीं खाना चाहते मजदूर

संवाददाता

मुंबई। कोरोना के एक साल बीतने के बाद फिर वैसी स्थिति बनने लगी है, जैसी पिछले साल बनी थी। मुंबई में कोरोना के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। यहां के लोगों को फिर से लंबा लॉकडाउन लगने का डर सताने लगा है। इसलिए मुंबई में रहने वाले प्रवासी मजदूरों ने अपने राज्य और शहरों की तरफ जाना शुरू कर दिया। मुंबई के सभी रेलवे स्टेशनों पर प्रवासियों की भीड़ लगी हुई है। ट्रेन की टिकट के लिए लंबी कतारें लग रही हैं। भिवंडी और ठाणे में हालात ज्यादा खराब हैं। इसके अलावा कंपनियों ने भी लॉकडाउन के डर से कर्मचारियों को निकालना शुरू कर दिया है। मुंबई के लोकमान्य तिलक टर्मिनस स्टेशन पर रविवार के बाद से हर दिन प्रवासी मजदूरों की भारी भीड़ नजर आ रही है। लोग अपने सामान और परिवार के साथ यहां डटे हुए हैं। स्टेशन में बिना रिजर्व टिकट के एंट्री नहीं मिल रही है। टिकट खिड़कियों पर लंबी कतार देखने को मिल रही है। उत्तर प्रदेश के रहने वाले और मुंबई के धारावी में संविदा पर हेल्थ वर्कर के रूप में काम कर रहे अहमद खान ने बताया, 'पिछली बार जिस तरह से अचानक लॉकडाउन लगा सरकार ने हमें परेशानी में डाल दिया, लोगों को पुलिस के डंडे खाने पड़े। ऐसे स्थिति फिर से न आए इसलिए हम वापस अपने गांव की ओर जा रहे हैं।'

खाना खाने के पैसे नहीं थे, किसी तरह घर से मंगवाए

यूपी के बांदा के रहने वाले राजेश परिहार मुंबई में कई साल से सिक्योरिटी गार्ड का काम कर रहे थे। लॉकडाउन लगने की आशंका के बाद कंपनी ने एक सप्ताह पहले उन्हें नौकरी से निकाल दिया। उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वे वापस घर जा सकें। किसी तरह घर से पैसे मंगवाए और अब वे वापस लौट रहे हैं। राजेश ने बताया, 'स्थिति नार्मल होने के बाद मैं यहां लौटा था। नौकरी जाने के बाद मेरे पास इतने पैसे नहीं थे कि मैं खाना भी खा सकूं, किसी तरह से पैसे मंगवा अब घर लौट रहा हूं।'

फिर से इन उद्योगों का उत्पादन हो सकता है प्रभावित

मजदूरों के पलायन करने से पावरलूम इंडस्ट्री सहित उससे जुड़े साइजिंग, डाइंग कंपनियों के अलावा मोती कारखाना एवं गोदामों के कामकाज, कंस्ट्रक्शन के काम पर बड़ा असर पड़ने वाला है। राज्य सरकार की ओर से जारी आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, लॉकडाउन के बीच साल 2020 में मुंबई समेत पूरे राज्य से 11.86 लाख प्रवासी मजदूरों का पलायन हुआ था। हालांकि, आंकड़ों में यह संख्या करीब 25 लाख के आसपास थी।

पिछले साल पैदल जाना पड़ा था

पिछले साल मार्च में देशव्यापी लॉकडाउन के बाद मुंबई में काम करने वाले लाखों प्रवासी मजदूरों का कामकाज बंद हो गया था, जिसके बाद मुंबई से उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश और झारखंड जैसे राज्यों में मजदूरों को पैदल जाना पड़ा था।

रेलवे ने बढ़ाई ट्रेनों की संख्या

यात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए सेंट्रल और मध्य रेलवे ने कई विशेष ट्रेनों को चलाने का निर्णय लिया है। मुंबई से गोरखपुर, पटना और दरभंगा के लिए विशेष ट्रेनें चलाने का निर्णय मध्य रेल ने लिया है। 01053 विशेष एलटीटी 13 और 20 अप्रैल को 4.40 बजे प्रस्थान करेगी और तीसरे दिन 2 बजे गोरखपुर पहुंचेगी। 01054 विशेष गोरखपुर से 15 और 22 अप्रैल को 4.05 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन रात 11.45 बजे एलटीटी पहुंचेगी। 21401 सुपरफास्ट विशेष ट्रेन पुणे से 9, 11, 16 और 18 अप्रैल को शाम 4.15 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 11.45 पर दानापुर पहुंचेगी।

भीड़ कम करने के लिए रेलवे ये कर रहा

मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी शिवाजी सुतार के अनुसार, केवल रिजर्व टिकट वालों को ही स्टेशन परिसर में आने और ट्रेनों में यात्रा की अनुमति है। पहले जो लोग सामान्य श्रेणी से यात्रा करते थे, अब उन्हें सेकंड सिटिंग श्रेणी में सीमित टिकट दी जा रही है। इसके अलावा प्लेटफॉर्म पर भीड़ न हों, इसके लिए प्लेटफॉर्म टिकट की कीमत 50 रुपए कर दी गई है।

कहां-कहां से आते हैं प्रवासी मजदूर: 'इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक उत्तर प्रदेश और बिहार से प्रवासी मजदूर खासतौर पर मुंबई और दिल्ली में सबसे ज्यादा जाते हैं। फिर नंबर आता है मध्य प्रदेश, ओडिशा और झारखंड के मजदूरों का।

चीनी मोबाइल खरीदने से पहले जान लें ये सच

भारतीय मोबाइल मार्केट में चीनी मोबाइल्स का बोल-बाला है। कीमत कम और फीचर्स ज्यादा। जाहिर है इनकी बिक्री आसमान छू रही है। श्योमी, ओपो, विवो, वन प्लस, आदि चीनी ब्रांड्स की धूम मची है। जबकि भारतीय ब्रांड्स जैसे-माइक्रोमैक्स, इंटेक्स, लावा, कार्बन, आदि मार्केट से गायब ही हो गए हैं। जब चीन ने लद्दाख बॉर्डर पर अवैध घुसपैठ की तब भारत में 'चीनी सामान के बहिष्कार' की लहर उठी। भारत ने चीन की 59 मोबाइल एप्स को बैन कर दिया। लेकिन इसका चीनी मोबाइल्स की बिक्री पर क्या असर पड़ा? भारत में चीनी मोबाइल्स का मार्केट शेयर जो 2020 में 76% था, इस वर्ष भी 72% के आस-पास है। यानि, चीनी मोबाइल अब भी खूब खरीदे जा रहे हैं। चीन और भारत के बीच व्यापार अब भी एक-तरफा है। भारत चीन से 66 बिलियन डॉलर का सामान आयात करता है जबकि केवल 20 बिलियन डॉलर का निर्यात करता है। चीनी सामान के बहिष्कार का बड़ा असर चीन पर हो सकता था, लेकिन लगता है हमने वो मौका गवां दिया। चीनी कम्युनिस्ट शासन न केवल चीन के नागरिकों के लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए खतरा है। पिछले 70 वर्षों में, कम्युनिस्ट पार्टी ने चीन को एक के बाद एक मानव निर्मित त्रासदियों के हवाले किया है, जैसे महान अकाल, सांस्कृतिक आन्दोलन, तियाननमेन स्क्वायर हत्याकांड, फालुन गोंग दमन, तिब्बत, शिनजियांग और हांगकांग में मानवाधिकारों का हनन, आदि। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अत्याचारों की हद तब पार हो गयी जब 2006 में किल्गौर और माटास रिपोर्ट ने खुलासा किया कि चीन में कैद आध्यात्मिक पद्धति फालुन गोंग के अभ्यासियों व अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों को उनके अंगों की तस्करी के लिए मारा जा रहा है। कोरोना वाइरस मसले पर चीन की लापरवाही, कवरअप और अंडर-रिपोर्टिंग का परिणाम पूरा विश्व भुगत रहा है। लेकिन चीन अपनी गलती मानने की जगह भारत, अमेरिका और यूरोप के देशों पर धौंस और दादागिरी दिखाने से बाज नहीं आ रहा है। चीन को सैन्य ताकत से रोकना मुश्किल है। केवल चीनी सामान के पूरी तरह बहिष्कार से ही उस पर असर पड़ सकता है। इसी सन्दर्भ में, प्रतिष्ठित मैगसेसे अवार्ड विजेता और शिक्षाविद सोनम वांगचुक कहते हैं कि भारत की बुलेट पॉवर से ज्यादा वॉलेट पॉवर काम आ सकती है। अगर हम सब बड़े स्तर पर चीनी व्यापार का बायकॉट करते हैं तो उसका चीनी अर्थव्यवस्था पर बड़ा असर पड़ेगा। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं तो एक तरफ हमारी सेना सीमा पर जंग लड़ रही होगी, और दूसरी तरफ हम और आप चीनी सामान, मोबाइल से लेकर कंप्यूटर, कपड़ों से लेकर खिलौनों तक, को खरीद कर चीन की सेना को पैसा भेज रहे होंगे। अब भारत को अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने का समय आ गया है। अब समय है, भारत के लोग निर्णय लें। जितना अधिक हम चीनी सामान खरीदते हैं, उतना ही अधिक हम उस तानाशाह शासन को ताकतवर बना रहे होते हैं। इसलिए चीनी मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद और अन्य सामान खरीदने से पहले सोचें। बॉलीवुड हस्तियां भी चीनी उत्पादों का विज्ञापन करने से पहले समाज और देश के लिए अपने दायित्व को समझें। क्या अब भी आप चीनी मोबाइल खरीदना चाहेंगे? इस बारे में अपनी राय जरूर बताएं।

भारत में हुए शोध में खुलासा: महिलाओं के मुकाबले पुरुषों को ज्यादा संक्रमित कर रहा है कोरोना वायरस

नई दिल्ली। कोरोना वायरस बेशक देश, राज्य, शहर, धर्म और जाति देखकर शिकार ना कर रहा हो, लेकिन लिंग भेद जरूर कर रहा है। दुनिया भर की रिसर्च और आंकड़ों के मुताबिक कोरोना पुरुषों और महिलाओं के बीच फर्क कर रहा है। वायरस के शिकार पुरुष ज्यादा हो रहे हैं जबकि महिलाएं कम। मध्यप्रदेश स्थित इंदौर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी के शोधार्थी द्वारा की गई रिसर्च में दावा किया गया है कि कोरोना के खतरे की इस भिन्नता की वजह महिला और पुरुषों में उनके लिंग के अनुसार पाए जाने वाले अलग-अलग हार्मोन हैं। विश्वविद्यालय के इस शोध निष्कर्ष को जाने-माने अमेरिकी जर्नल करंट कैंसर ड्रग टारगेट्स के ताजा अंक में भी प्रकाशित किया गया है। विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी के शोध टीम के प्रमुख डॉ. हमेंद्र सिंह परमार ने अमर उजाला से कहा, ग्लोबल हेल्थ 5050, जो स्वास्थ्य क्षेत्र में लैंगिक भेदभाव के खिलाफ काम करती है और आंकड़े जुटाती है, उसने 50 देशों के कोरोना के आंकड़े जारी किए थे। नवंबर 2020 तक कोरोना से मरने वालों के साथ ही गंभीर मामलों में पुरुषों की संख्या महिलाओं के मुकाबले कहीं ज्यादा थी। मौत के मामले में भी पुरुषों की संख्या महिलाओं से करीब तीन गुना ज्यादा है। यानी महिलाओं में कोविड से मौत की खतरा करीब तीन गुना कम है। उन्होंने आगे कहा, ब्रेस्ट कैंसर की दवाओं और उपचार के प्रबंध के शोध के दौरान हमने कोविड के असर को भी अध्ययन का विषय बनाया।

महाराष्ट्र: टीकाकरण में बनाया रिकॉर्ड

अब तक 81 लाख से ज्यादा लोगों को लगा टीका

मुंबई। कोरोना महामारी से सबसे ज्यादा प्रभावित महाराष्ट्र ने टीकाकरण में रिकॉर्ड बनाया है। सूबे में 16 जनवरी से कोरोना टीकाकरण की शुरूआत हुई और अब तक 81 लाख से ज्यादा लोगों को कोरोना का टीका लगाया जा चुका है। टीकाकरण का यह आंकड़ा देश के किसी अन्य राज्य की तुलना में सर्वाधिक है।

इससे महाराष्ट्र पहले क्रमांक पर और उत्तर प्रदेश टीकाकरण के मामले में चौथे स्थान पर है। राज्य सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग की ओर से मंगलवार को जारी किए गए आंकड़े में बताया गया है कि महाराष्ट्र में टीकाकरण 81 लाख को पार कर गया। टीकाकरण में महाराष्ट्र के बाद गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल का नंबर है। सूबे में 45 साल से अधिक

उम्र वालों को कोविड के दो टीके कोवैक्सीन और कोविशील्ड उपलब्धता और पसंद के अनुसार दिए जा रहे हैं। इस बीच मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से 25 साल से अधिक उम्र के सभी लोगों को टीकाकरण की अनुमति देने के लिए पत्र लिखा है। ठाकरे का कहना है कि इससे दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण कार्यक्रम के तहत एक बड़ी आबादी को कवर किया जा सकता है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव प्रदीप व्यास ने बताया कि महाराष्ट्र को अब तक कुल एक करोड़ छह लाख डोज मिला है जिसमें से 88 लाख डोज का इस्तेमाल किया जा चुका है। महाराष्ट्र में अभी तक कुल 81,27,248 लोगों को टीका लगाया गया है जिसमें से 72,98,206 लोगों को पहली खुराक दी गई है जबकि 8,29,042 लोगों ने दूसरी खुराक भी ले ली है। राज्य में मुंबई और पुणे सबसे ज्यादा कोरोना से प्रभावित हैं। इसलिए आर्थिक राजधानी मुंबई में 14,10,537 लोग और पुणे में 11,14,040 लोगों ने टीका लगवाया हैं। राज्य में प्रतिदिन औसतन 4 लाख लोगों को टीका लगाया जा रहा है।

टीकाकरण में दूसरे पर गुजरात और चौथे स्थान पर है यूपी

महाराष्ट्र के बाद गुजरात टीकाकरण के मामले में दूसरे स्थान पर है। गुजरात में कुल 76,89,507 लोगों ने टीका लगवाया है। इसमें से 68,17,703 लोगों ने पहली खुराक और 8,71,804 लोगों ने दूसरी खुराक ली है। जबकि राजस्थान में 72,99,305 लोगों में से 64,00,581 ने पहली खुराक और 8,98,724 लोगों ने दूसरी खुराक ली है। जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में 71,98,372 में से 60,71,090 ने पहली खुराक और 11,27,282 लोगों ने दूसरी खुराक ली है। छोटे राज्यों में शामिल मिजोरम में 73,566 लोगों ने, सिक्किम में 83,797 लोगों ने, पुडुचेरी में 85,421 लोग और नगालैंड में 86,221 लोगों ने टीका लगवाया है। वहीं, केंद्र शासित राज्यों में दमन व दीव में 22,989 लोगों ने, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह ने 25,217 लोगों ने और दादरा नगर हवेली में 26,133 लोगों ने कोरोना की खुराक ली है।

भारत में ही तैयार होंगी स्पुतनिक-वी की दस करोड़ डोज, रूसी कंपनी तैयार

नई दिल्ली। देश में कोरोना वायरस का प्रकोप तेजी से फैल रहा है, ऐसे में एक मात्र वैक्सीन ही ऐसा उपाय है जो लोगों को कोरोना से बचा सकती है। मौजूदा समय में भारत ने वैक्सीनेशन अभियान को तेज करने के लिए वैक्सीन का निर्यात पर अस्थायी तौर पर रोक दिया है। ऐसे में रूस की कंपनी पैनेसिया बायोटेक का कहना है कि वह भारत में हर साल स्पुतनिक-वी वैक्सीन की दस करोड़ खुराक का उत्पादन करेगा। कंपनी ने एक बयान जारी कर इस बात की जानकारी दी है। रूस की डायरेक्ट इंवेस्टमेंट फंड और पैनेसिया के संयुक्त बयान के मुताबिक, पैनिसिया बायोटेक के विनिर्माण संयंत्रों में स्पुतनिक वी के उत्पादन से आरडीआईएफ के अंतरराष्ट्रीय भागीदारों को इस टीके की आपूर्ति करने में मदद मिलेगी।

बुलडाणा हलचल

एमआईएम के जिला अध्यक्ष शहजाद खान ने 8 तालुका अध्यक्ष और 2 शहर अध्यक्ष नियुक्त किए

संवाददाता/अशफाक युसुफ

बुलडाणा। एमआईएम के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष, मलकापुर नगर परिषद के पार्षद शहजाद खान ईन को एमआईएम के महाराष्ट्र राज्य अध्यक्ष इम्तियाज जलील, कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. गफ्फार कादरी और महाराष्ट्र महासचिव और अमरावती नगर निगम समूह के नेता अब्दुल नाज़िम और विदर्भ के समन्वयक रियाजुद्दीन सर के मार्गदर्शन में बुलडाणा जिले में 8 तहसील अध्यक्ष और 2 शहर अध्यक्ष चुने गए हैं। इस बार, एमआईएम पार्टी जमीनी स्तर पर लोगों की समस्याओं को हल करने और प्रतिष्ठान द्वारा लोगों के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ उठने के लिए तैयार है। हालांकि, राज्य महासचिव और अमरावती नगर निगम समूह के नेता अब्दुल नाज़िम ने सभी

नव नियुक्त पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे नागरिकों और आम जनता की समस्याओं को हल करने के लिए हमेशा तैयार रहें। रियाजुद्दीन सर ने सभी से मजबूत खड़े रहने की अपील की, क्योंकि एमआईएम में ईगल लीप लेने की क्षमता है, भले ही यह खरोंच से शुरू हो।दूसरी ओर, जिला अध्यक्ष शहजाद खान ने कहा कि उनका उद्देश्य जिले में आगामी नगरपालिका चुनावों में 50 एमआईएम पार्षदों का चुनाव करना है और उन्हें दो नगरपालिकाओं में सत्ता मिलेगी। उन्होंने कहा कि उन्हें दो नगरपालिकाओं में सत्ता मिलेगी, उन्होंने कहा कि जिले भर के 25 आजी- माजी नगरसेवक जल्द ही एमआईएम में शामिल होंगे।इस अवसर पर, शाहनवाज को चिखली, वसीम शेख को खामगाँव, हाफिज ए. सत्तार को संग्रामपुर, शमीम भाई को जलगाँव जामोद, आरिफ खान को मोतला, नंदुरा को सैय्यद मंजूर और हफीज चाकर को शेगाँव तालुका अध्यक्ष नियुक्त किया गया। जबके सालिमोद्दीन को देउलगांव राजा और मुस्तफा भाई को लोणार शहर का अध्यक्ष नियुक्त किया गयाहै। शहजाद खान ने कहा कि पूर्व प्रदेश अध्यक्ष गफ्फार कादरी साहब द्वारा नियुक्त जिले के सभी पदाधिकारियों को बरकरार रखा गया है और बाकी को जल्द ही नियुक्त किया जाएगा।

हम कंपनियों के साथ चर्चा करके रेमेडिसवीर की दरों को नियंत्रित करेंगे: पालक मंत्री डॉ राजेंद्र शिंगणे

बुलडाणा। जिले में कोरोना रोगियों के लिए इस्तेमाल होने वाले रेमेडिविविर इंजेक्शन की आपूर्ति को बनाए रखने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। हमने उत्पादन बढ़ाने के लिए कंपनियों के साथ भी चर्चा की है। इसलिए, मांग पर इस दवा की आपूर्ति करना संभव होगा। साथ ही, रेमेडिसवीर कंपनियों के परामर्श से इस दवा की कीमत को नियंत्रण में रखा जा रहा है। यदि यह दवा जिले में बढ़ी हुई दर पर भी बेची जा रही है, तो इसकी जाँच होनी चाहिए, इस तरह के निर्देश 6 अप्रैल, 2021 को खाद्य एवं औषधि प्रशासन मंत्री और जिले के पालक मंत्री, डॉ. राजेंद्र जी शिंगणे द्वारा दिए गए। कोविद संक्रमण नियंत्रण को लेकर अभिभावक मंत्री

की अध्यक्षता में जिला कलेक्टर कार्यालय में एक बैठक आयोजित की गई। अभिभावक मंत्री इस समय बोल रहे थे। इस अवसर परजिल्हाधिकारी एस रामामूर्ती, जि.प मुख्य कार्यकारी अधिकारी भाग्यश्री विसपुते, जिल्हा पोलीस अधिक्षक अरविंद चावरीया, जिल्हा शल्य चिकित्सक डॉ नितीन तडस, अप्पर जिल्हाधिकारी दिनेश गिते, जिल्हा आरोग्य अधिकारी डॉ. कांबळे, सहायक आयुक्त (औषधे) अशोक बर्डे, औषध निरीक्षक गजानन घिरके, आदी उपस्थित थे। रेमेडिसविर के एमआरपी को कम करने के लिए केंद्र सरकार पाठ पुरावा भेजा गया है, यह कहते हुए कि पालक क मंत्री डॉ. शिंगणे ने कहा कि केंद्र सरकार को दवा की एमआरपी कम करने का अधिकार है। तदनुसार, एमआरपी को कम करने का प्रस्ताव केंद्र को भेजा गया है। कोरोना की काफी जांच की जा रही है। नतीजतन, रोगियों की संख्या बढ़ रही है। कोविद के खिलाफ टीकाकरण अत्यधिक प्रभावी है और टीकाकरण को तेज किया जाना चाहिए। राज्य सरकार द्वारा दिए गए आदेश के अनुसार, सभी आवश्यक सेवाओं का टीकाकरण किया जाना चाहिए। टीकाकरण की गति के आधार पर टीकों के पर्याप्त स्टॉक को बनाए रखा जाना चाहिए। विभाग को उसी हिसाब से योजना बनानी चाहिए। महिला अस्पताल में एक नया 100 बेड उपलब्ध कराया जाना चाहिए। टीबी में एक आईसीयू इकाई स्थापित की जानी चाहिए। तरलीकृत ऑक्सीजन की मांग दर्ज की जानी चाहिए और स्थिति के अनुसार तरल ऑक्सीजन की पर्याप्त आपूर्ति बनाए रखी जानी चाहिए।

पवित्र महिना रमजान मे 5 वें दिन पानी की आपूर्ति किया जाए, स्वाभिमानी ने कि जिला कलेक्टर से मांग

बुलडाणा। जिले में तालाबंदी की घोषणा की गई है। रमजान का मुस्लिम पवित्र महीना मई के महीने में शुरू हो रहा है। नगरपालिका प्रशासन द्वारा शहर मे 10 वें दिन जलापूर्ति की जा रही है। इसके कारण, रमजान के पवित्र महीने के दौरान 5 दिन के आड पानी की आपूर्ति करके नगरपालिका प्रशासन नागरिकों के उत्पीड़न को रोकना चाहिए। हमारे बांध में प्रचुर मात्रा में पानी की आपूर्ति है। इसलिए, 5 दिनों में पानी की आपूर्ति करना संभव है। अब गर्मी के दिन शुरू हो गए हैं और नागरिक गर्मी महसूस कर रहे हैं और पानी की कमी हो गई है। चूंकि 10 वें दिन

पानी की आपूर्ति नहीं होती है, इसलिए नागरिकों को टैंकर खरीदने पड़ते हैं और उनमें से कुछ को हैंड पंपों से पानी भरना पड़ता है। गर्मी के कारण, पानी कम आपूर्ति में लगता है और रमजान के दौरान उपवास रखना उनके लिए पानी भरना असंभव बना देगा। वर्तमान में, लॉकडाउन ने वित्तीय संकट भी पैदा किया है। इसलिए हर कोई पानी का टैंकर नहीं खरीद सकता। इसलिए, नगरपालिका रमजान के इस पवित्र महीने के दौरान मे 5 दिनों के आड पानी की आपूर्ति करनी चाहिए। ऐसी मांग स्वाभिमानी शेतकरी संघटनेचे विदर्भ कार्याध्यक्ष राणा चंदन व अल्पसंख्यांक आघाडीचे जिल्हाध्यक्ष शे. रफिक शे. करीम उन्होंने निवेदन द्वारा कलक्टर को निवेदन दिया।

राजस्थान हलचल

नारकोटिक्स पुलिस हिरासत में सोहेल खान की मौत सुनियोजित हत्या, भोपाल से आये स्वतंत्र जांच दल ने उच्च स्तरीय न्याययिक जाँच की अनुशंसा की!

संवाददाता/सैय्यद अलताफ हुसैन

मंदसौर। नारकोटिक्स पुलिस, मंदसौर की हिरासत में सोहेल पिता हामिद खान की बेरहमी से पिटायी के कारण बीते 2 अप्रैल को मृत्यु हो गयी थी। अखबारों व अन्य सूत्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर, मामले की गंभीरता को देखते हुए भोपाल के विभिन्न मानवाधिकार संगठनों ने तीन सदस्यीय स्वतंत्र जांच दल का गठन किया जिसमें नेशनल कंफेडरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स ऑर्गनाइजेशन्स (NCHRO) के एडवोकेट वासिद खान, मध्यप्रदेश लोकतांत्रिक अधिकार मंच (MPDRF) से विजय कुमार और मुस्लिम महासभा मध्यप्रदेश से प्रदेश सचिव समाज सेवक यूसुफ खान शामिल थे। स्वतन्त्र जांचदल के सदस्य 5 अप्रैल को मंदसौर आकर मृतक सोहेल खान के पीड़ित परिवार से मिले। चाचा इराद खान, भाई मुराद खान, जीजा आसिफ खान सहित अन्य दोस्तों और पड़ोसियों से जाँच दल के सदस्यों ने मुलाकात की। परिवार के सदस्यों ने जाँचदल को बताया की पोस्टमार्टम के दौरान सोहेल के गुप्तांगों सहित पूरे शरीर पर गंभीर चोटों के निशान पाये गये है। नारकोटिक्स थाने में उसे बेरहमी से पीटा गया था। इसी के चलते

हार्टअटैक से सोहेल की मौत हुई है। मामले को समझने के उद्देश्य से जाँचदल स्थानीय पत्रकारों, व वरिष्ठ समाजसेवियों से भी मिला। इसके अलावा जांच दल ने मन्दसौर नारकोटिक्स पुलिस अधीक्षक तिवारी जी से भी मुलाकात करने का प्रयास किया लेकिन अन्ततः उनसे फोन पर ही बात संभव हो पायी। घटना के बारे में पूछने पर अधीक्षक महोदय ने बताया कि पूरे मामले की न्यायिक जाँच चल रही है इसलिए फिलहाल वे कुछ कह नहीं सकते है। रिपोर्ट आने के बाद ही कुछ कहा जा सकता है। लगभग सभी पक्षों की बात सुनने के बाद जाँचदल ने प्राथमिक अवलोकन के आधार पर सोहेल खान की पुलिस हिरासत में हुई मौत को सुनियोजित हत्या किया जाना पाया और निम्नलिखित अनुशंसा की।

1. पूरे मामले में गंभीर रूप से मानवाधिकारों का हनन हुआ है। सुप्रीम कोर्ट के दिशानिर्देशों का घोर उलंघन हुआ है। अतः निश्चित समय सीमा के भीतर हाईकोर्ट रिटायर्ड जज के नेतृत्व में घटना की उच्चस्तरीय न्यायिक जांच हो।
2. दोषी पुलिस कर्मचारियों और अधिकारियों को अविलंब बर्खास्त कर उन पर हत्या का मुकदमा चलाया जाये।
3. पारिवारिक स्थिति को देखते हुए पीड़ित परिवार को 50 लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी जाए।
4. परिवार के सदस्य एवं चश्मदीद गवाह भयभीत हैं उन्हें जान का खतरा है इसलिये उन्हें न्यायिक सुरक्षा मुहैया करायी जाए।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

सेहत को लिए फायदेमंद है गुनगुना पानी

पानी पीना सेहत के लिए बहुत जरूरी है। डॉक्टरों के अनुसार हर किसी को दिन में कम से कम 8-10 गिलास पानी जरूर पीना चाहिए। इससे शरीर के विषैले पदार्थ बाहर निकल जाते हैं लेकिन अगर ठंडे पानी की बजाए गुनगुना पानी पिया जाए तो यह सेहत के लिए रामबाण है। आइए जाने रोजाना गुनगुना पानी पीने के फायदों के बारे में...

1. गुमगुना पानी पीने से ब्लड सर्कुलेशन तेज हो जाता है। वैसे तो हर मौसम में गुनगुना पानी पीना चाहिए लेकिन सर्दियों में तो जरूर गुनगुना पानी ही पिएं।
2. रोजाना सुबह खाली पेट गुनगुना पानी पीने से कब्ज की परेशानी दूर हो जाती है।
3. भूख न लगने से परेशान हैं तो एक गिलास गुनगुने पानी में नींबू का रस,काली मिर्च और नमक डालकर पीएं। इससे भूख लगनी शुरू हो जाएगी।
4. सारा दिन थकावट महसूस हो रही हो तो सुबह उठने के बाद खाली पेट गुनगुने पानी का सेवन करें।
5. स्किन से जुड़ी कोई परेशानी है या त्वचा पर किसी तरह के रैशेज पड़ रहे हैं तो गुनगुना पानी पीने से राहत मिलती है।
6. त्वचा रूखी और बेजान है तो 10-12 गिलास पानी जरूर पिएं। इससे त्वचा पर ग्लो आ जाएगा।

कॉस्मेटिक सर्जरी से पहले जानें ये साइड इफेक्ट

कॉस्मेटिक सर्जरी के दौरान और बाद में कई बातों का ध्यान रखना जरूरी है। जैसे इसे किसी अनुभवी सर्जन से कराएं, ऑपरेशन थिएटर आधुनिक टूल्स से लैस हो, संक्रमण से बचाव आदि। जानें अलग-अलग सर्जरी से होने वाली दिक्कतें ताकि ट्रीटमेंट के बाद इनका खयाल रखा जा सके-

हेयर रेस्टोरेशन (गंजापन)
गंजापन दूर करने के लिए तीन तरह की सर्जरी करते हैं। पहली, सिर में खाली जगह पर 3-4 मिमी बालों सहित स्किन निकालकर ट्रांसप्लांट करते हैं। दूसरी, सिर के दोनों ओर से बाल व त्वचा रक्तवाहिनी सहित सिर के आगे लाते है। तीसरी, सिलिकॉन बलून को बालों के नीचे लगाकर त्वचा डबल करते हैं।
साइड इफेक्ट : सर्जरी के बाद संक्रमण, निशान या अधिक ब्लीडिंग भी हो सकती है।
राइनोप्लास्टी : मोटी नाक को पतला करने, टेढ़ी नाक को सही आकार देने, दबी हुई नाक को शार्प करने के लिए राइनोप्लास्टी की जाती है।
साइड इफेक्ट : नाक की त्वचा पर लाल चकत्ते, सूजन व ब्लीडिंग हो सकती है। सर्जरी के बाद छह माह तक धूप से बचें।
आईब्रो लिफ्ट: यह सर्जरी दो तरह से होती है- बोटॉक्स व थ्रेड लिफ्ट। इसमें एजिंग के कारण झुकी हुई आईब्रोज और माथे की लटकी त्वचा को ठीक किया जाता है।
साइड इफेक्ट : संक्रमण, निशान दिखने व संवेदनशीलता खत्म होने जैसी दिक्कतें होती हैं।
ब्लेफरोप्लास्टी: इस सर्जरी में झुकी हुई पलकों व पफी आंखों को ठीक किया जाता है। इस दौरान अपर और लोअर आईलिड से अतिरिक्त फैट को निकालकर आंखों को सही लुक देते हैं।
साइड इफेक्ट : कुछ मामलों में लोअर आईलिड नीचे की ओर खिंच जाती है। जिसके लिए दोबारा सर्जरी करनी पड़ सकती है।
गाइनेकोमैस्टिया: कुछ आदमियों का सीना उभार लिए होता है। इस कारण वे हीनभावना के शिकार हो जाते हैं। ऐसे पुरुष इसे कम कराने के लिए गाइनेकोमैस्टिया कराते हैं।
साइड इफेक्ट : ब्लीडिंग, सूजन, निशान या स्किन पर लाल रंग के चकत्ते हो सकते हैं। स्किन का रंग बदलने के अलावा सीने की सेंसिविटी भी खत्म हो सकती है।
आर्म लिफ्ट: बेडौल हो चुके हाथों के ऊपरी भागों को सही आकार देने के लिए आर्म लिफ्ट सर्जरी कराई जाती है। इसमें हाथों के ऊपरी हिस्से में जमा फैट व लटकी हुई स्किन को हटाया जाता है।
साइड इफेक्ट : निशान इस सर्जरी का सबसे बड़ा साइड इफेक्ट है। कोहनी से लेकर अंडरआर्म तक की इस सर्जरी में दाग हमेशा के लिए रह सकते हैं।
फेस लिफ्ट: इस सर्जरी से चेहरे की झुर्रियां और लटकी हुई स्किन को हटाकर चेहरे व गर्दन की मसल्स को मजबूती दी जाती है व एक्स्ट्रा स्किन को निकाल दिया जाता है।
साइड इफेक्ट : संक्रमण, त्वचा का रंग बदलना, चेहरे की धमनियों में क्षति, संवेदनशीलता खत्म होने के साथ त्वचा पर लाल रंग के चकत्ते पड़ सकते हैं।
ऑटोप्लास्टी: ऑटोप्लास्टी में बड़े या बाहर निकले हुए कान को चेहरे के अनुरूप सही किया जाता है। कुछ लोग छिदे हुए कान के होल को छोटा करने के लिए भी यह सर्जरी करवाते हैं।
साइड इफेक्ट : संक्रमण, सूजन, ब्लीडिंग व निशान पडे का डर बना रहता है। कुछ मामलों में कान नेचुरल न दिखने पर दोबारा सर्जरी करानी पड़ सकती है।
चिन-चीक्स ऑग्युमेंटेशन: इस सर्जरी में छोटी ठुड्डी के ऊपर सिलिकॉन इंप्लांट करके इसको आकार देते हैं। कभी-कभी चिन की हड्डी को फेस के शेप के अनुसार घटाया-बढ़ाया जाता है।
साइड इफेक्ट : दर्द, सूजन व ब्लीडिंग के अलावा इम्प्लांट जगह से खिसक सकता है।
एब्डोमिनल प्लास्टी: प्रेग्नेंसी या वेट लॉस से कई बार पेट पर अधिक फैट जमा हो जाता है। जिसे निकालने के साथ मसल्स को भी टाइट कर बॉडी को सही आकार दिया जाता है।
साइड इफेक्ट : स्किन पर ब्लड क्लॉट व संक्रमण का डर रहता है।
ब्रेस्ट ऑग्युमेंटेशन: जन्म से अविकसित ब्रेस्ट, दोनों के साइज में अंतर होने व प्रेग्नेंसी के बाद लटके ब्रेस्ट को सही आकार देने के लिए यह सर्जरी की जाती है। इससे ब्रेस्ट में सिलिकॉन इम्प्लांट्स कर आकार बढ़ाया जाता है।
साइड इफेक्ट: अच्छी क्वालिटी के इम्प्लांट इस्तेमाल न किए जाने पर संक्रमण की स्थिति में इसे निकालना पड़ सकता है। निशान गहरा होने से ब्रेस्ट के हार्ड या टाइट होने जैसी समस्या हो सकती है।

लड़कों की यह परेशानियां लड़कियों को नहीं आती पसंद !

हर लड़का पूरी कोशिश करता है कि उसे अपनी गर्लफ्रेंड के सामने शर्मिंदा न होना पड़े लेकिन कई बार मर्दों में कुछ ऐसी समस्याएं होती हैं जो उन्हें अपने पार्टनर के सामने शर्मिंदा कर देती है। आज हम आपको ऐसी ही समस्याओं के बारे में बताने जा रहे हैं जिसके कारण आपको अपने पार्टनर के सामने शर्मिंदा होना पड़ सकता है।

गंजापन: कई बार समय से पहले ही बाल झड़ना शुरू हो जाते हैं। इसका कारण शरीर में जरूरी पोषक तत्वों की कमी भी हो सकता है। ऐसे में अपनी डाइट का पूरा ध्यान रखें।
खुजली: त्वचा रूखी होने के कारण उसमें खुजली होने लगती हैं। अगर आप पाटर्नर को सामने बार-बार खुजली करेंगे तो उनको बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा। ऐसे में मॉइश्चराइजर का इस्तेमाल करें।
पसीना: पसीने के बदबू के कारण भी आपको अपनी पार्टनर के सामने शर्मिंदा होना पड़ सकता हैं। ऐसे में नहाने से पहले पानी में थोड़ा नमक डाल लें। इससे पसीने की बदबू नहीं आएगी।
अधिक बाल होना: शरीर पर अनचाहे बाल भी आपको ऐसी स्थिति में डाल सकते हैं। ऐसे में समय-समय पर रेजर का इस्तेमाल करें।

कहीं आपका बच्चा तो नहीं देखता ज्यादा टीवी

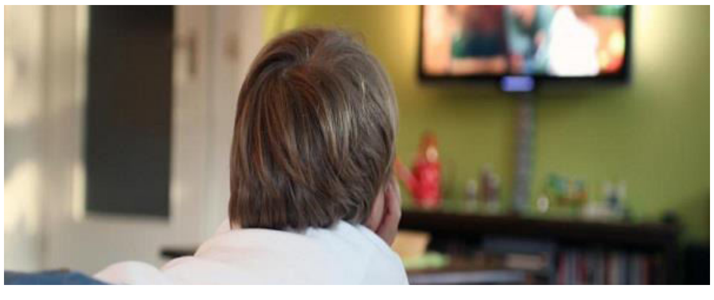

मोटापे की समस्या आजकल बड़ों से लेकर बच्चों तक देखने को मिलती हैं। आज कल आम देखने को मिलता है कि बच्चे फैटी तो होते हैं लेकिन उनकी हाइट नहीं होती। मोटापे के पीछे कई कारण होते हैं। बच्चों की गलत आदतें भी मोटापे का कारण हो सकती है। अधिक टीवी देखने से भी मोटापे का खतरा बढ़ता है। हाल में हुए शोध में पाया गया है कि टीवी को ज्यादा समय देने वाले और खाने-पीने से जुड़े विज्ञापन देखने वाले बच्चों में मोटापे का खतरा अधिक होता है। वहीं कम टीवी देखने वाले बच्चों में मोटापे कम पाया जाता है। टीवी पर विज्ञापन देखने के बाद बच्चे वहीं खादे की जिद करते हैं, जिसके कारण बच्चे फास्ट फूड और पैकेट बंद फूड्स का सेवन करते है।
आजकल के बच्चे पैकेट बंद स्नैक्स पर निर्भर करते हैं, जिसके कारण उनका वजन बढ़ता है। पैकेट बंद स्नैक्स में सोडियम की मात्रा अधिक पाई जाती है जिसके खाने के बाद भूख कम हो जाती है। बच्चे स्नैक्स खाने के बाद भोजन नहीं करते, जिससे उनके शरीर को पौष्टिक तत्व नहीं मिल पाते।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

सिद्धार्थ मल्होत्रा हुए घायल

सिद्धार्थ मल्होत्रा को चोट लगी है और इस खबर ने फैन्स को परेशान कर दिया है। बताया गया है कि उन्हें अपनी फिल्म के सेट पर चोट लगी जब वह किसी ऐक्शन सीक्वेंस की शूटिंग कर रहे थे। बताया गया है कि फिल्म के सेट हुई इस घटना में सिद्धार्थ को घुटने में चोट लगी है। बता दें कि सिद्धार्थ इन दिनों फिल्म 'मिशन मजनू' की शूटिंग कर रहे हैं, जिसमें रश्मिका मंदाना भी नजर आ रही हैं। इस फिल्म की शूटिंग इस वक्त लखनऊ में हो रही है। यह फिल्म गुजरे वक्त की एक सच्ची घटना पर बेस्ड है। इस फिल्म में ऐक्शन सीन की भरमार है और इसी कू शूटिंग करते हुए सिद्धार्थ के साथ यह हादसा हुआ। सूत्रों के मुताबिक, सिद्धार्थ जंप करते हुए एक ऐक्शन सीन कर रहे थे और तभी एक मेटल के टुकड़े से घुटना टकराया। सिद्धार्थ ने शूटिंग रोकने और रेस्ट लेने की बजाय चोट के लिए मेडिकेशन लिया। जहां चोट लगी थी वहां उन्होंने आइस लगाया और फिर उन्होंने बाकी के ऐक्शन सीन को कॉन्टिन्यू करने का फैसला किया।

कृति सेनन की सरपट भागती गाड़ी

कृति सेनन बॉलीवुड की उन एक्ट्रेसेस में से हैं जिनके पास भरपूर काम है। 2021 की ही बात करें तो कृति के पास 7 फिल्में हैं। वे एक सेट से दूसरे सेट भाग रही हैं। पूरे साल उनके पास सांस लेने की फुर्सत नहीं है। कृति इस समय अरुणाचल प्रदेश में है जहां 10 अप्रैल तक वे वरुण धवन के साथ 'भेड़िया' फिल्म की शूटिंग कर रही हैं। इसके बाद वे आदिपुरुष की शूटिंग में हिस्सा लेंगी। इसके अलावा जल्दी ही कृति को लेकर एक और फिल्म अनाउंस होने वाली है। कोरोना के खतरनाक दौर में वे सारी सावधानी के साथ शूटिंग कर रही हैं। बच्चन पांडे में वे अपना काम पूरा कर चुकी हैं। जैसलमेर में लंबा शेड्यूल चला था। आदिपुरुष का भी थोड़ा सा हिस्सा कीर्ति ने शूट किया था। 2013 में फिल्म 'हीरोपंती' से अपना करियर शुरू करने वाली कृति ने कम समय में अपनी पहचान बना ली है। इन फिल्मों के अलावा वे टाइगर श्रॉफ के साथ 'गणपत, 'मिमी' और 'हम दो हमारे दोद्व भी कर रही हैं। जल्दी उनको लेकर कुछ फिल्में और अनाउंस होने वाली हैं।

रितिक रोशन निभाएंगे गैंगस्टर का किरदार!

जब से तमिल फिल्म 'विक्रम वेधा' के हिन्दी रीमेक की खबर सामने आई है, तब से अभिनेता रितिक रोशन खूब सुर्खियां बटोर रहे हैं। ऐसे में, अब उनके शूट शेड्यूल की जानकारी सामने आ रही है। फिल्म से जुड़े एक सूत्र ने बताया, रितिक रोशन फिल्म की शूटिंग जून में शुरू करेंगे। वह गैंगस्टर की भूमिका निभाते हुए नजर आएंगे, वे फिल्म में वेधा की भूमिका निभाएंगे जो काफी रोमांचक है। सूत्र आगे कहते हैं, जबकि रितिक के लिए किरदार से जुड़ी कुछ तैयारी अभी से शुरू हो गई है, वही किरदार के प्रिपरेशन के लिए मई का महीना अधिक इंटेंस होगा। फिल्म को पुष्कर और गायत्री की निर्देशक जोड़ी द्वारा निर्देशित किया जाएगा, जिन्होंने मूल फिल्म को भी निर्देशित किया था। वर्तमान में, वे प्री-प्रोडक्शन स्टेज में हैं, जिसमें वह चीजों को फाइनल कर रहे हैं और शूटिंग शुरू करने के लिए कमर कस रहे हैं। इस फिल्म में सैफ अली खान पुलिस ऑफिसर विक्रम की भूमिका में रितिक रोशन के ऑपोजिट नजर आएंगे। ऐसे में, इस फिल्म में उन्हें एक साथ देखना काफी रोमांचक होने वाला है।